कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 04 जुलाई, 2026

फ्लावर अरेंजमेंट: फूलों से बढ़ाएँ कमाई

विकास यादव[1*], रूपाली शर्मा[1] और एवं संदीप भारद्वाज[2]

[1]बागवानी विभाग, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषिविश्वविद्यालय, हरियाणा, भारत

[2]बेसिक इंजीनियरिंग विभाग, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषिविश्वविद्यालय, हरियाणा, भारत

***E-mail: vikasydv100@gmail.com**

परिचय

फ्लावर अरेंजमेंट ताजे या सूखे फूलों, हरी पत्तियों, शाखाओं और सजावटी सामग्री को किसी पात्र या बास्केट में निश्चित योजना के अनुसार व्यवस्थित करने का माध्यम है। इसमें प्रत्येक फूल और पत्ती का स्थान, ऊँचाई और दिशा इस तरह तय की जाती है कि पूरी संरचना संतुलित और सुव्यवस्थित दिखे। यह केवल किसी बर्तन में फूल रख देना नहीं है, बल्कि रंगों, आकार और पात्र के बीच तालमेल बिठाना है।

फ्लावर अरेंजमेंट की प्रमुख विशेषताएँ

- फूल और पत्तियों का स्थान तथा झुकाव पहले से निर्धारित होतेहैं।
- सजावट में संतुलित रूप दिखाई देता है जो किसी एक तरफ झुकता नहीं है।
- फूलों का प्राकृतिक रूप और ताजगी बनी रहती है।
- रंगों और पात्र का चयन अवसर के अनुसार किया जाता है।
- पूरी बनावट देखने में सहज और आकर्षक लगती है।

फ्लावर अरेंजमेंट क्यों आवश्यक है?

बाजार में सीधे काटे गए फूलों के मुकाबले तैयार सजावट की मांग अधिक है। ग्राहक ऐसे उत्पाद पसंद करते हैं जिन्हें सीधे मेज या काउंटर पर रखा जा सके। साधारण फूल मंडी में कम दर पर बिकते हैं, जबकि बास्केट या गमले में सजने के बाद उनका व्यावसायिक मूल्य बढ़ जाता है। इससे कम लागत में अधिक लाभ कमाना संभव होता है।

फ्लावर अरेंजमेंट में प्रयुक्त सामग्री एवं उपकरण

- **कट फ्लावर:** ताजे कटे हुए फूल जैसे गुलाब, जरबेरा, लिली, गेंदा या रजनीगंधा।
- **हरित सामग्री:** कामिनी, एस्पैरागस, थूजा (मोरपंखी), फर्न या पाम की पत्तियाँ जो खाली जगह भरती हैं।
- **फूलदान एवं कंटेनर:** काँच, सिरेमिक, प्लास्टिक या बाँस की टोकरियाँ।
- **फ्लोरल फोम:** हरा स्पंज जो पानी सोखता है और तनों को पकड़कर रखता है।
- **फ्लोरल टेप एवं फ्लोरल वायर:** तनों को बांधने और सही आकार में मोड़ने का तार व टेप।
- **केन्ज़ान/फ्लावर फ्रॉग:** पीतल की कीलों वाली भारी प्लेट, जिसका उपयोग तनों को सीधा खड़ा रखने में होता है।
- **कैंची एवं सेक्येटर:** तनों और डालियों को साफ काटने के औजार।
- **पानी एवं पुष्प संरक्षक घोल:** साफ पानी और फूलों को सड़ने से बचाने वाला घोल।

फ्लावर अरेंजमेंट की प्रमुख शैलियाँ

फ्लावर अरेंजमेंट को दो मुख्य श्रेणियों में बाँटा जाता है।

A. पाश्चात्य शैली: पाश्चात्य शैली में ज्यादा मात्रा में फूलों और पत्तियों का उपयोग होता है। इसका मकसद गमले को पूरी तरह भरकर एक घना ढाँचा तैयार करना होता है। इसमें बर्तन का अधिकतर हिस्सा फूलों से ढक जाता है।

पाश्चात्य शैली के मुख्य प्रकार:

1. **त्रिकोणीय पुष्प सज्जा:** इसमें बीच का मुख्य तना सबसे ऊँचा होता है और दोनों तरफ ढलान बनती है, जिससे त्रिभुज का आकार बनता है। यह औपचारिक जगहों के लिए सही रहता है।

चित्र 1: त्रिकोणीय पुष्प सज्जा

2. **गोलाकार पुष्प सज्जा:** केंद्र में एक फूल लगाकर चारों तरफ बराबर दूरी पर फूल सजाए जाते हैं। यह गोल मेज के बीच में रखने में काम आता है।

चित्र 2: गोलाकार पुष्प सज्जा

कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 04 जुलाई, 2026

3. **एल-आकार पुष्प सज्जा:** एक सीधी खड़ी लाइन और एक आड़ी लाइन मिलकर 'L' का आकार बनाती हैं। जहाँ दोनों लाइनें मिलती हैं, वहाँ मुख्य फूल लगाया जाता है।

चित्र 3: एल-आकार पुष्प सज्जा

4. **अंडाकार पुष्प सज्जा:** बीच की सीधी रेखा के दोनों तरफ पंखे की तरह फूल सजाकर अंडाकार आकृति बनाई जाती है।
5. **एस-आकार पुष्प सज्जा:** इसमें फूलों को 'S' के आकार में घुमाव देकर लगाया जाता है। इसे हॉगार्थ कर्व भी कहते हैं।

चित्र 4: अंडाकार पुष्प सज्जा

चित्र 5: एस-आकार पुष्प सज्जा

6. **अर्धचंद्राकार पुष्प सज्जा:** इसमें फूलों को आधे चाँद के आकार में सजाया जाता है। दोनों किनारे ऊपर मुड़े होते हैं और बीच का हिस्सा गहरा होता है।

चित्र 6: अर्धचंद्राकार पुष्प सज्जा

(चित्र स्त्रोत : गूगल / इंटरनेट)

B. पूर्वी या जापानी शैली: इसे इकेबाना कहते हैं। इसमें पाश्चात्य शैली की तुलना में कम फूलों का इस्तेमाल होता है। यहाँ खाली जगह और डालियों के झुकाव का अपना मतलब होता है। तने गमले के किनारे को नहीं छूते। इसमें सुखी लकड़ी और शंख का उपयोग भी होता है।

इकेबाना तीन मुख्य रेखाओं पर आधारित है:

- **शिन:** सबसे लंबी शाखा जो स्वर्ग को दर्शाती है।
- **सोए:** मध्यम लंबाई की शाखा जो मनुष्य को दर्शाती है।
- **हिकाए:** सबसे छोटी शाखा जो धरती को दर्शाती है।

जापानी शैली के मुख्य प्रकार:

- **मोरिबाना:** उथले और चौड़े बर्तन में पिन-होल्डर का इस्तेमाल करके प्राकृतिक दृश्य बनाना।
- **नागेइरे:** ऊँचे जार में लंबी शाखाओं का सीधा उपयोग।
- **जियू-बाना:** मुक्त शैली जिसमें फूलों के साथ लकड़ी या धातु का प्रयोग होता है।
- **मोरिमोनो:** इसमें फूलों के साथ-साथ ताजे मौसमी फल और सब्जियाँ भी सजाई जाती हैं।

चित्र 7: शिन, सोए, हिकाए रेखाएं

चित्र 8: मोरिबाना पुष्प सज्जा

चित्र 9: नागेइरे पुष्प सज्जा

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 04 जुलाई, 2026

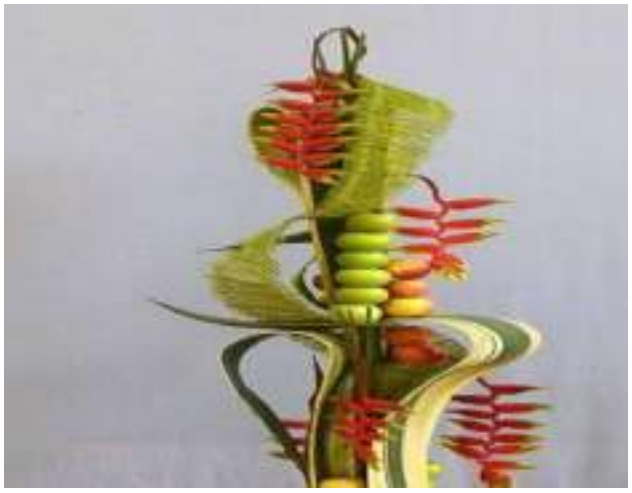

चित्र 10: मोरिमोनोपुष्प सज्जा
(चित्र स्त्रोत: गूगल / इंटरनेट)

फ्लावर अरेंजमेंट द्वारा मूल्य संवर्धन एवं किसानों के लिए व्यवसायिक अवसर

खेत से कटे फूल आम तौर पर दो से तीन दिनों में खराब होने लगते हैं। मंडी में आवक बढ़ते ही दाम भी तेजी से गिरते हैं। ऐसे में फूलों को सीधे बेचने की जगह बास्केट, गुलदस्ते या फूलदान में सजाकर बेचा जाए, तो इनकी कीमत बढ़ जाती है। तब खरीदार सिर्फ फूल नहीं लेता, बल्कि एक तैयार सजावटी सामान खरीदता है। इस तरह के सजावटी फूलों की मांग होटल, दफ्तर, अस्पताल, शादी-ब्याह, धार्मिक और सामाजिक आयोजनों में लगातार बनी रहती है।

अब सिर्फ बड़े महानगरों तक ही नहीं, बल्कि छोटे शहरों और कस्बों में भी फ्लावर अरेंजमेंट की मांग बढ़ने लगी है। किसान अपने खेत के फूलों के साथ आसपास मिलने वाली पत्तियां और हरी सामग्रियां जोड़कर कम खर्च में सजावट तैयार कर सकते हैं। इससे मंडी के उतार-चढ़ाव का जोखिम घटता है। साथ ही किसानों को सीधे ग्राहकों, लोकल फ्लोरिस्ट, होटल, बैंक, दफ्तर या इवेंट कंपनियों से जुड़ने का मौका मिलता है।

यह काम किसानों के अलावा एफपीओ, महिला स्वयं सहायता समूहों और गांव के युवाओं की कमाई का जरिया बन सकता है। शुरुआत में ज्यादा पैसे लगाने की जरूरत नहीं पड़ती। स्थानीय मांग को देखते हुए धीरे-धीरे काम बढ़ाया जा सकता है। ट्रेनिंग लेकर युवा अपनी खुद की डेकोरेशन यूनिट या फ्लोरल सर्विस खोलकर नियमित कमाई कर सकते हैं।

फूलों की बिक्री के लिए दिल्ली की गाज़ीपुर, कोलकाता की मल्लिक घाट, मुंबई की दादर, बेंगलुरु की के.आर. मार्केट और चेन्नई की कोयमबेदु जैसी थोक मंडियां काम आती हैं। मंडियों के ताजा दाम जानने के लिए ई-नाम (राष्ट्रीय कृषि बाज़ार) और एगमार्क नेट (कृषि विपणन सूचना नेटवर्क) जैसे सरकारी पोर्टल मौजूद हैं। इसके अलावा फर्न्स एन पेटल्स, फ्लावर ऑरा और इंटर फ्लोरा इंडिया जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म भी सजावटी फूलों और बुके की बिक्री के लिए नया रास्ता दे रहे हैं।

काम शुरू करते वक्त किसानों को पहले छोटे स्तर से कदम उठाना चाहिए। आसपास की मांग समझ में आ जाए, तब कारोबार बढ़ाएं। कृषि विज्ञान केंद्र और उद्यान विभाग समय-समय पर पुष्प सज्जा की तकनीकों पर ट्रेनिंग देते हैं, जिनसे नई बातें सीखी जा सकती हैं। फूलों की सही समय पर कटाई, ताजगी, सफाई और स्थानीय पत्तियों का सही इस्तेमाल इस काम में सबसे ज्यादा मायने रखता है।

निष्कर्ष

फूलों को सीधे बेचने के बजाय अगर सही तरीके से सजाकर बाजार में उतारा जाए, तो उनकी कीमत बेहतर मिलती है। थोड़ी कलात्मक सोच और सही रखरखाव का ध्यान रखकर किसान अपनी कमाई बढ़ा सकते हैं। केवल फसल पैदा करने तक सीमित रहने की जगह इस तरह के सजावटी काम से जुड़ना खेती को लंबे समय तक फायदे का जरिया बना सकता है।